INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VII-2nd Lang.	Department: Hindi	Class work
Worksheet -3	**Topics: - लेखन कार्य- अनुच्छेद**	Date- 24/04/24

प्रश्न-1 **अनुच्छेद- काश! अगर मैं पक्षी होता**

अगर मैं पक्षी होता तो मैं दूर अनंत गगन में स्वच्छंद होकर विचरण करता। मैं धरती के इस छोर से दूसरे छोर को अपने पंखों से नाप लेता। अगर मैं पक्षी होता तो आसमान की ऊँचाइयों को छूने की कोशिश करता। मैं उन ऊँचाइयों को छूने की कोशिश करता जहाँ तक पहुँचने का सपना इंसान केवल देखते ही रह जाते हैं। मैं खुली हवा में अपने पंखों को फहरा कर ठंडी हवा का आनंद लेता। अपने साथी पक्षियों के साथ झुंड बनाकर इधर से उधर विचरण करता। पल भर में मैं जहाँ जाना चाहता वहाँ जाता। अगर मैं पक्षी होता तो कभी किसी पहाड़ की चोटी पर उन्मुक्त होकर पहुँच जाता तो कभी किसी पेड़ की डाली पर मस्त होकर झूलता। यदि मेरा मन होता तो मैं समुद्र की सीमा को अपने पंखों से नापने की कोशिश करता तो कभी पर्वत की ऊँचाइयों को अपने पंखों से नापने की कोशिश करता।

अगर मैं पक्षी होता तो मैं पेड़ पर बैठकर अपनी आवाज में मधुर गीत गाता| मदमस्त होकर सारी ऋतुओं का आनंद लेता। मेरे अंदर इंसानों की तरह छल-कपट, तनाव-चिंता, लालच-मोह आदि नहीं होता। मुझे तो बस इस जग के आनंद में डूब जाने की कामना होती।

प्रश्न-2 **स्वतंत्रता का महत्त्व पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।**

संकेत बिंदु- स्वतंत्रता का महत्त्व, स्वतंत्रता की आवश्यकता, स्वतंत्रता के लाभ|

ऐसा कहा जाता है कि गुलामी के पकवानों से आजादी की सूखी रोटियाँ भली हैं। स्वाधीनता या स्वतंत्रता का मनुष्य के जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। यहाँ तक कि यह मनुष्य ही नहीं, बल्कि सृष्टि के प्रत्येक प्राणी का जन्मसिद्ध एवं प्राकृतिक अधिकार है। गुलामी या पराधीनता बहुत बड़ा अभिशाप है। पशु-पक्षी तक भी स्वतंत्र जीवन जीने के आकांक्षी होते हैं। हिंदी के प्रसिद्ध कवि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविता में स्वतंत्रता की आकांक्षा को पक्षियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। पक्षी अपने लिए स्वतंत्रता की माँग करते हुए कहते हैं कि-

"हम पक्षी उन्मुक्त गगन के पिंजर बद्ध न गा पाएँगे,
कनक तीलियों से टकराकर पुलकित पंख टूट जाएँगे।"

स्वतंत्र रहकर पक्षी को नीम की 'कड़वी फलियाँ' खाना भी स्वीकार है, लेकिन पिंजरे में रहकर सोने की कटोरी में दिए गए मैदे से बना पकवान भी पसंद नहीं हैं। जब पशु-पक्षी इस प्रकार की इच्छा रखते हों, तो मनुष्य परतंत्र होकर किस प्रकार सुखी रह सकता है? स्वतंत्रता व्यक्ति

की निर्णायक शक्ति और सर्जनात्मक क्षमता के विकास को बढ़ावा देती है। अंग्रेजों की गुलामी के काल में हमारे देश की जनता का मानसिक, शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास अत्यंत बाधित हो गया था। जब देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुए, तब से हमने व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की है। स्वतंत्रता सभी सुखों की जननी है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी परतंत्रता को दुखदायी बताते हुए कहा है कि 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' अर्थात पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। इस प्रकार व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्वतंत्रता का महत्त्व सर्वाधिक है।

प्रश्न-3 मेरे जीवन का लक्ष्य पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

संकेत बिंदु- जीवन में लक्ष्य की आवश्यकता, लक्ष्य क्यों हैं?,
आपका लक्ष्य क्या है?, बनकर क्या करेंगे? |